बुन्देलखण्ड में राम

विनोद मिश्र 'सुरमणि'*

सारांश -

राम भारतीय जनमानस के केंद्र में स्थित वह आदर्श हैं, जिनकी छवि केवल धार्मिक नहीं, अपितु सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक चेतना में भी गहराई से रची-बसी है। भारत के विभिन्न अंचलों में रामकथा की विविध परम्पराएँ हैं, परन्तु बुन्देलखण्ड की भूमि पर राम के प्रति जो श्रद्धा, समर्पण और रचनात्मक ऊर्जा दृष्टिगोचर होती है, वह विशेष महत्व रखती है। बुन्देलखण्ड की कला निधि में चित्रकला का अपना खजाना है। बुन्देलखण्ड की राजधानी रही ओरछा के स्मारकों/मंदिरों के छज्जों/छतों में बने भित्ति चित्र इस कला के अनूठे उदाहरण हैं बुंदेली कलम पर भले ही अनेक आंचलिक कला विधाओं ने कब्जा किया हो परंतु बुंदेली कलम की विविधता उसे जीवित बनाए रखें रही है। दतिया कलम के चित्र बुंदेली चतेवरी के अमिट उदाहरण हैं।

मंदिरों/महलों और चैत्य स्मारकों में बने भित्ति चित्र रामकथा को भी दृष्टि गोचर करते हैं लक्ष्मी नारायण मंदिर ओरछा, दतिया के पारीछत मकबरा तालबेहट, पन्ना ,चंदेरी के मंदिर आदि में बने राम कथा के भित्ति चित्र रामजी के प्रति श्रद्धा भाव और विश्वास के प्रतीक हैं। भित्ति चित्रों के साथ यहाँ के चित्रकारों द्वारा बनाए गए तेल चित्र तथा ग्रंथों में कथानुसार बने चित्र भी श्रीराम की कथा को भव्यता के साथ जोड़ते हैं राजकीय संग्रहालय लखनऊ की गैलरी में दतिया कलम द्वारा निर्मित राम कथा के अमूल चित्र सुरक्षित हैं। यह शोधपत्र बुन्देलखण्ड अंचल में राम की उपस्थिति, उनकी लोकस्वीकृति और उनसे जुड़े सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों का विश्लेषण करता है।

कुञ्जी शब्द - बुन्देलखण्ड, राम, चित्रकला, राजधानी, ओरछा, स्मारक, मन्दिर, आंचलिक कला, दतिया, महल, चैत्य, स्मारक, भित्तिचित्र, रामकथा, लक्ष्मीनारायण, पारीछत मकबरा, तालबेहट, पन्ना, चंदेरी, श्रद्धा, विश्वास, तेलचित्र, राजकीय संग्रहालय।

- **प्रस्तावना -**

बुन्देलखण्ड एक प्राचीन सांस्कृतिक अंचल है जहाँ वैदिक, जैन, शैव और वैष्णव परम्पराओं का समन्वय मिलता है। यहाँ के ग्राम्य जीवन, लोकभाषा (बुन्देली), उत्सवों, गीतों और रीति-रिवाजों में राम की छवि गहराई से समाहित है। क्षेत्रीय मंदिर, विशेषतः ओरछा, चित्रकूट, आदि स्थल रामकथा से सीधे सम्बंधित हैं। चित्रकूट तो राम की वनवासलीला का प्रमुख स्थल माना गया है। बुन्देलखण्ड में राम के प्रति भक्ति भाव केवल धार्मिक ग्रंथों तक सीमित नहीं, बल्कि वह लोकगीतों, लोककथाओं, आल्हा, बारहमासा, झूलना, कजरी, राई आदि लोकविधाओं में भी अभिव्यक्त होता है। राम के चरित्र को लोकनायकों की भांति प्रस्तुत किया गया है – वे एक राजा ही नहीं, लोकपाल और धर्मनायक हैं। गोस्वामी तुलसीदास की 'रामचरितमानस' का गहरा प्रभाव बुन्देलखण्ड पर रहा है। तुलसीदास का चित्रकूट प्रवास उनके मानस रचने की प्रेरणा का केंद्र बना। बुन्देलखण्ड वासियों की वाणी में आज भी मानस की चौपाइयाँ सहज रूप से रची-बसी हैं। मानस की कथा बुन्देलखण्ड के लोक मानस का हिस्सा बन गई है। बुन्देलखण्ड में रामलीला केवल धार्मिक आयोजन नहीं, अपितु एक सामाजिक संवाद, सांस्कृतिक सृजन और लोकस्मृति का उत्सव है। नगरों, कस्बों और ग्रामों में आज भी पारम्परिक मंचन शैली में रामलीला आयोजित होती है। कई स्थानों पर 'नौटंकी' और 'लोकनाट्य' के रूप में रामकथा का मंचन होता है। इसमें लोक कलाकारों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। राम की अवधारणा ने बुन्देलखण्ड के सामाजिक और राजनीतिक विमर्श को भी प्रभावित किया है। रामराज्य की कल्पना आज भी सामाजिक आदर्श के रूप में जीवित है। स्वतंत्रता संग्राम के समय स्थानीय कवियों और संतों ने राम के नाम को लोकजागरण का माध्यम बनाया।

बांदा उत्तर प्रदेश के अंचल में बसा ग्राम राजापुर विश्वकवि संत शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास जी का जन्म स्थान हैं। जन्म स्थान को लेकर विद्वानो में मतभेद बराबर चर्चा का विषय बना रहा है अपनी-अपनी तर्क-कुतर्क शक्ति का परिचय देकर तथाकथित विद्वानगण कभी अयोध्या के निकट राजापुर को मानकर अपनी संतुष्टि कर लेते हैं, तो वही अनेक विद्वान बांदा के निकट बसा गांव राजापुर को ही गोस्वामी जी की जन्म स्थली प्रमाणित करते हैं। परंतु रामचरितमानस की भाषाशैली में बुंदेली का प्रभाव ही गोस्वामी तुलसीदास जी को बुन्देलखण्ड के समीप लाता है क्योंकि अवधी के अनेकों रचनाकारों की काव्य-कृतियों में किसी अन्य आंचलिक बोली का प्रयोग नहीं दिखता जैसा कि गोस्वामी तुलसी के साहित्य में दिखाई पड़ता है। उसका मूल कारण उनका अपने क्षेत्र में जीवन व्यतीत करना तथा उनका इस क्षेत्र में जन्म लेना ही प्रमाणित करता है बुंदेली के ऐसे शब्द जो सिर्फ बुन्देलखण्ड में ही बोले जाते हैं वह रामचरित में प्रयोग किए गए हैं। यही कारण है कि बुन्देलखण्ड की संस्कृति, परंपरा और आस्था में राम बसे हुए हैं हालांकि राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त दद्दा ने स्पष्ट लिख दिया था कि -

राम तुम्हारा चरित्र स्वयं ही काव्य है

कोई कवि बन जाए सहज सुभाव्य है

उक्त आशय श्रीराम की अनन्य भक्ति के प्रति जनमानस को प्रेरित करने वाला है। साहित्य सृजन के गद्य-पद्य में राम रचे बसे हैं ही, लोक आस्था में श्री राम संस्कार और परंपरा के संवाहक बने हैं। बुन्देलखण्ड में जन्म और विवाह संस्कार के गीत राम से ही शुरू होते हैं और राम सीता से ही समापन। उदाहरण -

कौशल्या रानी तेरी कूख सिरानी

बुन्देलखण्ड में किसी परिवार में बच्चे का जन्म होने से पहले व जन्म लेने के बाद में संस्कार गीत या तो श्रीकृष्ण पर आधारित होते हैं या फिर श्रीराम पर। 15वीं सदी में ओरछा के महाराज मधुकर शाह की रानी श्रीराम की अनन्य भक्त हुई हैं। अपनी एक हट के माध्यम से वह रामलला सरकार को ओरछा लाती हैं वह भी श्रावण शुक्ल पंचमी, संवत 1630 के पवित्र नक्षत्र पुष्य नक्षत्र में। इस कारण यहां के संस्कार गीतों में श्रीराम का ही जन्मोत्सव "राम नौमी" मनाने की प्रथा है। आगे चलते-चलते बुन्देलखण्ड की कवियत्रियाँ (रानी-महारानी) ने भक्ति परक पदों की रचनाएँ की जो लोक में व्याप्त हुई। घर-घर में मंगल कार्यों के शुभ अवसर पर गाई-बजाई जाने लगी। भाड़/भाट/किन्नर आदि भी राम जन्म की बधाईयों को अपनी कला में जोड़ते गए।

चिरंजीवी तेरौ छौना कौशल्या माई
आज अवध में जन्म लियो है घर-घर बजत बधाई

बुन्देलखण्ड में श्री राम के प्रति श्रद्धा व उनका जन मानस में समिष्ट होना इस बात का द्योतक है कि बुन्देलखण्ड संस्कार, संस्कृति और परंपरा से राममयी है।

राजा मधुकर शाह की रानी कुंवरि गणेश।
अवधपुरी से ओरछा लाई अवध नरेश।।

ओरछा के भव्य रानी महल में विराजमान श्रीराम-सीता बुन्देलखण्ड की सभ्यता के प्रतीक हैं आस्था के केंद्र में हैं। जिसका प्रभाव जनमानस के साथ साहित्य और संस्कृति के सृजनकारों के मस्तिष्क में रहा। फलस्वरुप लोकगीत, गारी, बधाई से लेकर पद रचनाएं राम की लीला के साक्ष्य बने।

- **विवाह संस्कार गीतों में राम सीता -**

जनमानस में रचे बसे व आस्था का पर्याय श्रीराम जी और माता सीता जी के विवाह को प्रतीक मानकर बुन्देलखण्ड में किसी भी जाति-परिवार ऐसा नहीं है जिनके वर-कन्या रामजी और सीताजी के रूप में न समझे जाते हो -

तेल चढ़ावे के गीत से यह परंपरा प्रारंभ हो जाती है।

"मोरी सियाजू सौं चढ़रओ तेल
मातिन लाई दोऊ बिरिया
चढ़रओ तेल, फुलेल मालिन लाइ दोऊ बिरिया।

- **वर पक्ष :-**

मोरे राम जू खौ चढ़त है तेल, जुर आई सब त्रिरिया

आगे चलकर बारात का दिवस आ ही जाता है और सजे धजे द्वार बंदनवार से चमक रही पौर के समक्ष अपने सिरों पर कलश रखें बुन्देलखण्ड की महिलाएं गाती हैं-

बाजत आवे राजा राम जू के बाजे सौ
एक लख घुड़वा सवा लख हाथी सौ
ओर न छौर दिखत भले जू।

यहाँ यह स्पष्ट है कि दूल्हा चाहे गरीब परिवार का हो या अमीर परिवार से बारात का वर्णन अयोध्या से पधारी बारात की भव्यता से ही है। यही हमारी अनन्य भक्ति का सूचक है। राजा जनक की पौर पे दसरथ सुत आये। टीका आदि के बाद यह बुंदेली गारी रोमांचित कर देती है जो समधी और पावने होते हैं वह अपने को स्वयं किसी राजा या महाराजा से कम नहीं समझते और शान से शादी वाले घर में प्रवेश करते हैं।

विवाह की रात्रि भर प्रत्येक संस्कार में गीतों की मधुरता घर-वर पक्ष के लोगों को भावनात्मक जोड़े रखती है। खाना-पीना-हास्य परिहास सब कुछ गीतों के माध्यम से आदान-प्रदान किया जाता है। चढ़ाव में गाए जाने वाला गीत जब महिलाएं गाती है तब आँखें नम होने लगती हैं। यह गारी-संगीत की दृष्टि से कठिन ताल में निवद्ध है जिसे दीपचंदी ताल कहते हैं उदाहरण-

मेरी सियाजू खौ चढ़त चढ़ाओ री
चढ़त चढ़ाओ सखी जुर आई मेरी सियाजू को चढ़त चढ़ाओ।

इसी प्रकार सुहाग देने पर भी यही धुन में एक गारी भी कठिन ताल से निकलती है- **रंग बरसत है फुलैल बरसत है सौ आज मोरे अंगना में रंग बरसत है** (यह भी दीपचंदी ताल में निबद्ध है)।

हास्य परिहास और भोजन के अवसर की बात ही कुछ और है जनकपुर की सखियां बन महिलाएं दूल्हा बने राम जी चारों भाइयों और समधियों से गीत द्वारा आनंद लेती-देती हैं। ऐसी गारी विशुद्ध रूप से हास्य विनोद की पर्याय है और आज के दौर में बुंदेली गीतों की अश्लीलता प्रस्तुत करने वाले अश्लील गायकों पर करारे जवाब भी।

"मोरे रामजी से करौ न ररियाँ, जनकपुर की सखियां
वर खौ आतुर परसी पातुर पर सी, सौ परस गई दुनिया। जनकपुर.....
वर खौ कचौड़ी परसी, पकौड़ी परसी सौ परस गई गुजियाँ

आदि-आदि व्यंजन रामजी व समधियों को परसे गए और उसके बाद व्यंगात्मक गारी गाई जाती हैं। बुन्देलखण्ड में ऐसे ही व्यवहार और संस्कार से राम विवाह उत्सव में गाए जाने वाला राम कलेवा भी हास्य विनोद का उत्कृष्ट उदाहरण है चारों भाइयों को घेर कर उन्हें खरी-खरी सुनाई जाती हैं। इस अवसर का एक पद जो तुलसीकृत है एक अनोखी परंपरा को स्पष्ट करता है जिसमें रामजी से सीता जी का कंगन नहीं छूट पा रहा है।

सुंदर वर दूल्हा राजा राम, कंगन छौरे जानकी को
कंगन छौरे दोऊ कर जौरे वे तो परै सियाजू के पाँव कंगन छौरे जानकी कौ।
जिन भुवन प्रहलाद उद्धारे जिन भुजन हिरनाकुश मारे, तिनसे कंगन छूटत ना ही सियाजू कौ।
सारी तिरियाँ जुर आई जनकपुर की।
तिनमें तुलसीदास गुलाम।
कंगन छोरें जानकी को सुन्दर वर दूल्हा राजा राम।

यह कुछ ही उदाहरण है सैकड़ो गीतों में राम सीता जी के विवाह/जन्म उत्सव के पारंपरिक गीत उनके प्रति समर्पण का भाव दर्शाते हैं।

- **भित्ति चित्रों में राम कथा -**

बुन्देलखण्ड की कला निधि में चित्रकला का अपना खजाना है। बुन्देलखण्ड की राजधानी रही ओरछा के स्मारकों/मंदिरों के छज्जों/छतों में बने भित्ति चित्र इस कला के अनूठे उदाहरण हैं बुंदेली कलम पर भले ही अनेक आंचलिक कला विधाओं ने कब्जा किया हो परंतु बुंदेली कलम की विविधता उसे जीवित बनाए रखें रही है। दतिया कलम के चित्र बुंदेली चतेवरी के अमिट उदाहरण हैं। मंदिरों/महलों और चैत्य स्मारकों में बने भित्ति चित्र रामकथा को भी दृष्टि गोचर करते हैं लक्ष्मी नारायण मंदिर ओरछा, दतिया के पारीछत मकबरा तालबेहट, पन्ना ,चंदेरी के मंदिर आदि में बने राम कथा के भित्ति चित्र रामजी के प्रति श्रद्धा भाव और विश्वास के प्रतीक हैं। भित्ति चित्रों के साथ यहाँ के चित्रकारों द्वारा बनाए गए तेल चित्र तथा ग्रंथों में कथानुसार बने चित्र भी श्रीराम की कथा को भव्यता के साथ जोड़ते हैं राजकीय संग्रहालय लखनऊ की गैलरी में दतिया कलम द्वारा निर्मित राम कथा के अमूल चित्र सुरक्षित हैं। झांसी राजकीय संग्रहालय की गैलरी में भी राम कथा के चित्र बुंदेली कलम के उदाहरण हैं। सागर के असरार खांन के नवीन चित्रकला के माध्यम से श्रीराम कथा की चित्र श्रृंखला अपने केंद्र में प्रशिक्षण ले रहे शिक्षार्थियों के सहयोग से तैयार की है। बुन्देलखण्ड के मंदिरों में रखे चित्र भगवान राम के सोंदर्य का बखान करते है। यह अलग बात है कि कालांतर में पुरातात्विक व्यापारियों या दलालों ने पुजारियों ने संग्रहालय की आर्थिक स्थिति को भांपकर उन्हें कुछ चन्द रुपयों में खरीद कर अन्य ऐसी जगह पर बेंच दिया जहां पर बुन्देलखण्डी के रूप में इन चित्रों को समझा भी नहीं जाता होगा। बुन्देलखण्ड में साहित्य की दृष्टि से भी श्रीराम के चरित्र पर बहुत लिखा गया गोस्वामी तुलसीदास स्वयं बुन्देलखण्ड के राजापुर में जन्म लेकर चित्रकूट और ओरछा में अपनी साधना को विस्तार देते हैं। दतिया के कवि वासुदेवजी जी ने लिखा था-

छत्रपति छत्रसाल की मिसाल मिलै किते, दुष्ट दल दर्प की धरा है जो बुन्देलखण्ड।
दानवीर वीर सिंह देव की तुला सी भाषी, वासुदेव- न्याय मुखरा है जो बुन्देलखण्ड।
धर्मवीर हरदौल, मधुकर शाह जू की, जन्म भूमि पावन धरा है जो बुन्देलखण्ड।
तुलसी के नंदन ने चंदन घिसौ है इतै, भारत को तुलसी धरा है जो बुन्देलखण्ड।

(दतिया दर्शन)

राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त जी की उर्मिला, लोक कवि ईसरी की राममयी चौकड़ियां, शशिधर पटेरिया की बुन्देली रामायण, मानस बटोही की बुंदेलो वन पथ में राम, कवि अवधेश का ग्रंथ शबरी, डॉ. रविन्द्र शुक्ल का शत्रुघ्न चरित्र कमलकांत शर्मा का महिमा प्रभु राम की, पूरन चन्द्र शर्मा की पुस्तक कनक मृग आदि अनेक साहित्य सृजन राम के चरित्र को जनमानस के लिए प्रस्तुत करते हैं।

कहने का तात्पर्य साहित्य, संस्कृति, लोक, परम्परा, संस्कार सभी क्षेत्र बुन्देलखण्ड में राममयी हैं राम के हैं राम के माध्यम से हैं। तभी यहां पर एक-दूसरे से राम-राम भईया कहा जाता है, कहावतों में तुमाओ राम भलौ करे, महिला हो या पुरुष उनके नाम, गांव या कस्बा उनके नाम राम के नाम से भी जाने जाते हैं। शनिवार व मंगल को रामसभा, सुबह-सुबह प्रभात फेरी, सुंदरकांड और रामायण का पाठ मंगल कार्यो पर करवाने का चलन हमारी अपनी संस्कारित कार्य के रूप हैं। रामलला को रामराजा सरकार बनाने वाला बुन्देलखण्ड ही है आरती पर सलामी देने वाला बुन्देलखण्ड ही है इससे यहां की परंपरा संस्कृति और पहचान को बचाना हम सबका कर्तव्य है, जिसे भविष्य के लिए सुरक्षित करना होगा।

आप सभी जनों खौ जय रामराजा की।

*साहित्यकार एवं कलाविद, संगीत गुरुकुल, मधुकर मार्ग, पकौड़िया महादेव, दतिया (मध्य प्रदेश)।